

ASHA ARCHIVES

939	
RND 44 11.15	

21

श्रीगणेशायनमः॥ श्री नमो य वा॥ कवनममनकवनपवनकवनप्राणकवन
 साहकवनब्रह्म कवनहंस कवनकालकवनशुन्मे कवनजीव कवनसिव क
 वननिरंजन श्रीशुविनासि जिवाच॥ मनचंचलपवनधास प्राणनृपति
 साहसुन्मेब्रह्मदया हंसअविनासि शुन्मेपवन कालनिःकालः कर्मवंध
 नजीव॥ कर्मसुक्तासिवः सर्वव्यापिकनिरंजन॥ श्रीदत्तत्रय जिवाच॥ हेस्वामि
 कहावैसेमन कहावैसेपवन कहावैसेप्राण कहावैसेसह कहावैसेब्रह्म
 कहावैसेहंस कहावैसेकाल कहावैसेशुन्मे कहावैसेजीव कहावैसे॥
 शिवः कहावैसेनिरंजन॥ श्रीशुविनासि जिवाच॥ हृदयवैसेमननाभिव

शिवशक्ति

राम

हरि

रामकृष्णवाल्मीकीयतमा

राम

१

सै पवन॥ अनहदवैसै सह॥ निरंतरवैसै प्राण॥ ब्रह्मांडवैसै ब्रह्म॥ गगनवैसै हं
स॥ अनुपमेवैसै भुम्बे॥ कमलवैसै काल कायावैसै जीव बंडवैसै शिव॥ सु
ष्मणवैसै निरंजन॥ श्रीदत्ता त्रय उवाच॥ तोस्वामि ह्येयना होता॥ मन कहं
होता॥ नाभिना होता पवन कहं होता॥ निरंजनना होता प्राणा कहं होता॥ अ
नहदना होता सह कहं होता॥ ब्रह्माराडना होता॥ ब्रह्म कहं होता॥ गगन
ना होता॥ हंस कहं होता॥ अनुपना होता॥ भुम्बे कहं होता॥ कमलना होता
काल कहं होता॥ कायाना होता॥ जीव कहं होता॥ बंडना होता॥ शिव कहं
होता सुष्मना होता॥ निरंजन कहं होता॥ श्रीशुविनाशि उवाच॥ दृढ
सम श्री कृष्ण गोविन्द हरि हरि हर हर देव देव नाना

यज्ञा होता मन अनुपमे होता ॥ जाभिना होता पवन निराकार मे होता ॥ अन
हृदना होता वायु अंकार मे होता निरंतर ॥ ना होता प्राण अभिगत मे हो
ता ॥ ब्रह्माडना होता ब्रह्म जो निस्वरूप मे होता ॥ गगना होता हंस
अविनाश मे होता ॥ अनुपना होता शुभे काल मे होता ॥ कायान होता जि
वः शिव मे होता ॥ बबुन होता शिव निरंजन मे होता ॥ शुष्म नाना होता निरं
जनः अक्षय पुरिष मे होता ॥ दत्त चय जिवा च ॥ तो स्वामि मन का जीव कवन
पवन का जीव कवन ॥ प्राण का जीव कवन ॥ वायु का जीव कवन ॥ ब्रह्म का जि
व कवन ॥ हंस का जीव कवन ॥ शुभे का जीव कवन ॥ काल का जीव कवन
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गोविन्द ॥ हर हर ॥ हिरि ॥

॥ राम ॥
॥ २ ॥

॥ राम ॥
॥ २ ॥

न॥ शिवका जीव कवन् ॥ निरंजनका जीव कवन् ॥ श्री अविनाशिका ७
वाच ॥ मनका जीव पवन् ॥ पवनका जीव प्राण ॥ प्राणका जीव वाह
वाहका जीव ब्रह्म ॥ ब्रह्मका जीव हंस ॥ हंसका जीव काल ॥ कालका
जीव शून्ये ॥ शून्येका जीव आप जिव ॥ जीवका जीव शिव ॥ शिवका
जिव निरंजन ॥ निरंजनका जीव निराकार ॥ निराकारका जीव ॥ अ
नन्तपुरुष ॥ श्री दत्तात्रय उवाच ॥ कथं उत्पन्नं निरंजनं ॥ कथं उत्पन्नं
शिव ॥ कथं उत्पन्नं जिव ॥ कथं उत्पन्नं शून्ये ॥ कथं उत्पन्नं काल ॥ कथं
उत्पन्नं अनुप ॥ कथं उत्पन्नं हंस ॥ कथं उत्पन्नं ब्रह्म ॥ कथं उत्पन्नं
श्री निन्दे गोविन्दे करे मरुते गोविन्दे वासुदेवे नमः ॐ ॐ ॐ ॐ

बाहः कथं उत्पन्ने प्राणा ॥ कथं उत्पन्ने पवन ॥ कथं उत्पन्ने मनः ॥ श्री आवि
नाद्या उवाच ॥ अनित्यं उत्पन्ने निरंजन ॥ निरंजन उत्पन्ने दिव ॥ दिव
व उत्पन्ने जिव ॥ जिव उत्पन्ने अनुप ॥ अनुप उत्पन्ने शून्ये ॥ शून्ये उ
त्पन्ने काल ॥ काल उत्पन्ने योति ॥ योति उत्पन्ने ब्रह्म ॥ ब्रह्म उत्पन्ने
हंस ॥ हंस उत्पन्ने ब्रह्माड ॥ ब्रह्माराड उत्पन्ने अभिगत ॥ अभिग
त उत्पन्ने प्राणा ॥ प्राणा उत्पन्ने मन ॥ मन उत्पन्ने पवन ॥ श्री दत्ता
त्रय उवाच ॥ तो स्वामित न छूटे ॥ स्वास का हास मान ॥ बाह क हा
स मान ॥ काल का हास मान ॥ शून्ये का हास मान ॥ हंस का हास मा
न ॥ वन्दे देव हरे गोविन्द गोविन्द गोविन्द नन्द हरे हरि हरि

॥ राम ॥
॥ ३ ॥

न॥ ब्रह्मका हासमान॥ जीवका हासमान॥ शिवका हासमान
निरंजनका हासमान॥ श्री अविनाशि ज्ञा य॥ तनछुटे स्वासपवन
मैसमान॥ पवनप्राणमैसमाना॥ प्राणमनमैसमाना॥ मनसहमैस
माना॥ बाह्य अविगतमैसमाना॥ अविगत ब्रह्ममैसमाना॥ ब्रह्महंस
मैसमाना॥ हंस अविनाशि मैसमाना॥ कालशुन्ये मैसमाना॥ शुन्ये
अनुपमैसमाना॥ जीवशिवमैसमाना॥ शिवनिरंजनमैसमाना॥
निरंजन अतः पुरुष अविनाशि मैसमाना॥ अविनाशि आपहि आ
पमैरहे॥ ॐ वा हा वायु नहि॥ वर्ती नहि॥ गुरा नहि॥ मन नहि॥ आका
श सार॥ श्री कृष्ण वास॥ देवा य त मः हरि हरि हर हर तार य मः

सन्निहि ॥ सर्वसेरहित है ॥ आकार रहित है ॥ जगमरा सेरहित है ॥ अगम
है ॥ अगाध है सर्वव्यापिक है ॥ उहादि न नहि ॥ रावि नहि भुंमे नहि
नेशन नहि ॥ दूर नहि ॥ विनायि दे पा सनहि ॥ वैलो कमे भरि पूर है ॥ संसा
र पर पंचसेरहित है ॥ निर्लेप का डुंका गम नहि ॥ गुरु गुरु कि गम है ॥ आ
पमे आप ही है ॥ इति श्री दत्तात्रय अविनाशियां वादे संपूर्ण शुभम्



राम
॥ ४ ॥